॥ श्री ॥

पार्श्वनाथचरित

PAARSHVANAATHACHARITA

वादिराज · ११वीं शती · अभिलेख ५८/९०

श्री मतिसागर → **वादिराज** → श्री वादीभसिंह

संक्षिप्त परिचय

आचार्य वादिराज कृत संस्कृत महाकाव्य — तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का चरित; वादिराज की काव्य-प्रतिभा का उत्कृष्ट निदर्शन।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

पार्श्वनाथचरित — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ५८ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता वादिराज; रचना-काल ११वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक २३१) के अनुसार इनका समय १०१०–१०६५ है तथा गुरु श्री मतिसागर। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "एकीभाव स्तोत्र" उल्लिखित है। इसी लेखनी से जीवंधरचरित भी इस सूची में सम्मिलित है। समकालीन ग्रन्थों में धर्मपरीक्षा, श्रावकाचार, सुभाषितरत्नसंदोह, वर्धमानचरित, न्यायकुमुदचन्द्र, प्रमेयकमलमार्तण्ड परिगणित हैं।

इसी लेखनी से

जीवंधरचरित

समकालीन ग्रन्थ

धर्मपरीक्षा · श्रावकाचार · सुभाषितरत्नसंदोह · वर्धमानचरित · न्यायकुमुदचन्द्र · प्रमेयकमलमार्तण्ड

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ५८ — मूल छायाचित्र

← वर्धमानचरित

न्यायकुमुदचन्द्र →